त्रिरायतन यात्रा (प्रचीन लिंगपुराण)

इसको त्रिकण्टक-यात्रा भी कहते हैं।

अविमुक्तं च स्वर्लीन तथा मध्यमकं पदम।
एतत्रिकणटकं देवि मृत्युकालेऽमतप्रदम।। ७

इस यात्रा में अविमुक्तेश्वर (विश्वनाथ-मन्दिर में) स्वर्लीनेश्वर (नया महादेव प्रह्लाद घाट पर) तथा मध्यमेश्वर (मैदागिन के उत्तर) का दर्शन-पूजन होता है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.